यवं दत्ता वरं ताभ्या यह देवेभ्य रूपितः। इताश्रनमनुद्याय जगाम विदिवं प्रभुः।
पावक्रय तदा दावं दग्ध्वा यन्द्रगपित्तः। श्रहानि पञ्च चैक्रञ्च विरराम सुतर्पितः।
जग्ध्वा मांसानि पोला च मेदांसि रुधिराणि च। युक्तः परमया प्रीत्या तावुवाचाच्युतार्जुनो।
युवाभ्या पुरुषाय्याभ्या तर्पितोऽस्मि यथासुखं। श्रनुजानामि वां वीरो चरतं यच वाञ्चितं।
यवं तो समनुद्यातो पावकेन महात्मना। श्रजुनो वासुदेवश्च दानवश्च मयस्तया।
परिक्रम्य ततः सर्वे चयोऽपि भरतर्षभ। रमणीये नदीकूले सहिताः समुपाविश्रन्॥

इति श्रीमहाभारते श्रतसाहस्या संहिताया वैयासिका श्रादिपर्वणि खाण्डवदाहः समाप्त श्रतस्थिकदिशता ज्ञायश्रा १३॥ समाप्तमादिपर्व॥

वैराशिक्षीयनं जैव स्थामुद्रेमकारि च । सुम्रा जावि स्वामाने मन्त्रभूतेषु विमुत्रा। ः

त्रादिपर्वणि सप्तविंग्रत्यधिकदिश्रताध्याया दितोयाध्याये व्यासेन प्रतिज्ञाता किन्तु पूर्वतनसेखकप्रमादेन चतु स्तिश्रद धिकदिश्रताध्याया दृश्यन्ते बद्धपुस्तकानां पुनः पाठसाम्यं विद्यत दति कुत्र कुत्राध्यायाधिकां जातं तिन्नस्रयो न भवति स्नाक सङ्घाया श्रपि वैषम्य तत्प्रमादेनैवेति॥

में विकास साम जार । त्यां के विकास का कि विकास का कि विकास का कि कि विकास का जा कि विकास का जा कि विकास का कि इस्तार्थिय के ति का विकास के कि वहाँ क

म संग्रह पान प्रयास के में प्रतास के में प्रतास के स्वास के से मार्थ के स्वास के अभिनेत्र महिनाहों अपने मार्थ के मार्थ के स्वास के स्वास

अध्यात्र तिवारायरा जांमहा चारा र देवरक मान अध्यान वासाय कार्या । देवरक मान अध्यान वासाय कार्यात विवार

नंगरिका विश्वास कुरवेत हो। स्थान कि प्राचनका अपास पर सहित्यों हे से बार साथ कि जी है। सनीर का की काञ्च ना सम्बन्धित पर सहस । सम्बन्धित के प्राची के बार बेवस समित के कर्ता है।

हार युवारचा समिद्रामारे स्वितिहास्तर अवर स्वर्गातं सर्वात्रां प्रमानिव प्रमानिव प्रमानिव हु। तत्र ह स्वर्ण

अवस्थित से में उत्तर रे में बार में में बार क्रिका के स्वापना अवस्था सामानि सम्बाधि अवस्थित सम्बाधि के स्वापन

लासिशासि व मधी लिए बाम बार्ति मान कर्या वा स्वीवाणि ज सर्वाति प्रता वा वा वा

वास्त्रहेंनीरियवायात्रामीतियांनेस्त्रामीत्रहेंने उत्तर्वनियम स्वायाय भी उने